अध्याय–8
यहूदी, ईसाई एवं इस्लाम धर्मपंथ

(i) यहूदी धर्म पंथ

यहूदी धर्म प्राचीनतम धर्मों में से एक है। इस धर्म में आध्यात्मवाद का पूर्व प्रभाव दृष्टिगत् होता है। ईसाई एवं इस्लाम धर्म का विकास यहूदी धर्म से हुआ है।

'हजरत मूसा' को यहूदी धर्म का प्रथम प्रवर्तक माना जाता है। मूसा ने ईश्वर दर्शन प्राप्त किया और ईश्वर ने, उन्हें यहूदियों के भविष्य के विषय में जो आदेश दिये, उनकी पालना करते हुए, ईश्वर उपासना की पद्धति का प्रचार एवं मंदिर निर्माण की पद्धति का वर्णन किया। उन्होंने न्याय एवं कर्त्तव्यशास्त्र संबंधी पुस्तकों की रचना की।

यहूदी धर्म का आधार 'बाइबिल' है। बाइबिल के दो खण्ड है– 1. ओल्ड टेस्टामेंन्ट (प्राचीन विधान) 2. न्यू टेस्टामेंट (नवीन विधान)

यहूदियों ने प्राचीन विधान को धार्मिक ग्रंथ के रूप में स्वीकार किया। इस ग्रंथ में जगत की सृष्टि, मनुष्य की उत्पत्ति की कहानी तथा आदम और ईव के पतन की कथा है। साहित्यिक दृष्टि से ये उत्कृष्ट ग्रंथ है। इसके तीन खण्ड है– 1. कानून 2. भविष्य वक्ता 3.पवित्र लेख

ईश्वर–विचार

यहूदी धर्म की एक मान्यता यह है कि जगत में एक नैतिक व्यवस्था है, जिसका सचालन नैतिक परायण ईश्वर है। इसलिये इनके मत में, ईश्वर एक है।

यहूदी धर्म के पूर्व प्रकृति के भिन्न–भिन्न वस्तुओं की अराधना की जाती थी (अनेकेश्वरवाद) किन्तु यहूदी धर्म ने इसके विपरीत प्रतिक्रिया स्वरूप एकेश्वरवाद का समर्थन किया। ये मूर्तिपूजा का भी विरोध करते है।

यहूदी धर्म के अनुसार ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है किन्तु वह मानवीय व्यक्तित्व के विपरीत असीम है, जबकि मानव ससीम हैं। ईश्वर के प्रेम एवं दया मानव के लिये अपेक्षित हैं। वही मनुष्य ईश्वर की ओर अग्रसर हो सकता है, जिसे ईश्वर चाहता है।

यहूदी धर्म के ईश्वर को 'Jehovah' कहा जाता है। ईश्वर ने स्वयं कहा कि वे 'Jehova' है। उन्हें छोड़कर अन्य की अराधना करना कल्पना से परे है।

'Jehova' सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाला) परम सत्ता जगत का सृष्टा, मनुष्य का निर्माणक एवं अत्यधिक शक्तिशाली है। ईश्वर जगत की व्यवस्था का एकमात्र आधार है। उसकी इच्छा तत्काल पूर्ण होती है। वह देश (स्थान) और काल (समय की सीमाओं से परे है) वह पवित्र है।

ईश्वर न्याय प्रिय, दयालु एवं शान्ति प्रिय गुणों से युक्त माना गया है। किन्तु इसी के साथ–साथ ईश्वर में कुछ अशोभनीय गुण भी विद्यमान है और वे है–ईर्ष्या और कठोरता। जिन व्यक्तियों से ईश्वर नाराज रहता है, उन्हें कठोर दण्ड भी प्रदान करता है।

यहूदी धर्म में ईश्वर को 'पिता' कहा गया हैं। ईश्वर और मनुष्य के मध्य पिता–पुत्र का संबंध है। ईश्वर अपने पुत्र के प्रति अन्यायी नहीं होता और पुत्र के द्वारा अपने पाप का प्रायश्चित करने पर, वह उन्हें क्षमा भी कर देता है।

जगत में व्याप्त 'अशुभ' के संबंध में यहूदी धर्म की मान्यता है कि अशुभ वास्तविक है। ईश्वर में विद्यमान कठोरता के कारण अशुभ की उत्पत्ति होती है। ईश्वर द्वारा प्रदत्त अतिवृष्टि, बाढ़, ज्वालामुखी, तूफान द्वारा मनुष्य का जीवन कष्टपूर्ण हो जाता है।

यहूदी धर्म में 'कर्मवाद' के सिद्धान्त को स्वीकार किया गया है। उनका मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी सत्ता है और उसके अच्छे और बुरे कर्मो के अनुसार उसे पुरस्कार और दण्ड मिलता है।

कर्म सिद्धान्त के साथ ही यहूदी धर्म पुनःर्जन्म की धारणा को भी स्वीकार करते है। अपने कर्मो के फल भोगने के लिये व्यक्ति को दूसरा जीवन ग्रहण करना पड़ता है। साथ–साथ आत्मा की अमरता को भी यह धर्म स्वीकार करता है।

नीतिशास्त्र

नैतिकता यहूदी धर्म की धूरी है। नैतिकता का पालन एक पवित्र कर्त्तव्य है। यहूदी के नैतिक विचारों को दस आदेशो के रूप में किया गया है –

1. मैं तुम्हारा ईश्वर हूँ और तुम्हें मिस्र देश से मुक्त कर यहाँ लाया हूँ।
2. मेरे सिवा तुम्हारे लिये दूसरा कोई देवता न होगा। तुम न किसी प्रकार की मूर्ति बनाना, न स्वर्ग की वस्तु के रूप को गढ़ना।
3. तुम व्यर्थ ईश्वर का नाम न लेना। ईश्वर का व्यर्थ नाम लेने वाले के निर्दोष नही समझा जायेगा।
4. तुम पवित्र दिन को मत भूलना। उस दिन तुम्हें कोई काम नहीं करना होगा। भगवान ने छः दिन काम करके सातवें

दिन विश्राम किया।

5. माता–पिता का आदर करों।
6. हत्या न करो।
7. व्यभिचार न करो।
8. अपने पड़ौसी के खिलाफ झूठी गवाही न दो।
9. अपने पड़ौसी के मकान, स्त्री, नौकर, नौकरानी, बैल, गदहा (गधा) – किसी वस्तु के प्रति लालच न करों।

आचरण संबंधी सद्‌गणों में– यहूदी धर्म, संतोष, दान, आत्म–संयम, सत्यता, शान्ति आदि को ग्रहण करने का उपदेश देता है। सन्तोष को प्रधान धर्म मानते हुए, सन्तोषी व्यक्ति को सबसे धनवान व्यक्ति माना जाता है।

अपनी अपवित्र इच्छाओं और वासनाओं पर विजय पाने हेतु आत्म संयम पर बल दिया गया।

सत्यता पालन करने वाला मनुष्य ईश्वर कृपा का भागीदार होता है।

यहूदी धर्म कुछ कर्मो को नैतिक दृष्टि से वर्जित समझते है। जैसे–मूर्तिपूजा, अपशब्द, हत्या, चोरी, अन्याय, अधर्म आदि।

यहूदी धर्म में न्याय–दिवस

यहूदियों के अनुसार मृत्यु के पश्चात् मनुष्य की आत्मा तीन दिन तक शरीर के चारों और चक्कर काटती है। मोह के कारण वह शरीर छोड़ना नही चाहती। इसके बाद उसके द्वारा किये गए कर्मो को मूल्यांकन होता है। उसी दिन को न्याय–दिवस कहा जाता है। उस दिन प्रत्येक व्यक्ति के कर्मो की जाँच होती है।

अतः यह कह सकते हैं कि यहूदी धर्म का मानवीय सभ्यता के विकास में अभूतपूर्व योगदान रखना है। यही धर्म, ईसाई धर्म का पथ प्रर्दशक रहा है।

(ii) ईसाई धर्म पंथ

विश्व के प्रमुख धर्मों में ईसाई धर्म का विशिष्ट स्थान है। ईसाई धर्म के समर्थकों की संख्या विश्व के सभी धर्मो की अपेक्षा अधिक है।

ईसाई धर्म के संस्थापक जिसस क्राइस्ट या ईसा मसीह है। उनका जन्म 4 बी.सी. में बेथलेहम शहर में हुआ। उनका जन्म यहूदी परिवार में हुआ था। बाल्यकाल से ही ये विलक्षण स्मरण शक्ति के धनी थे। बाल्य काल से ही उन्होंने शास्त्रार्थ में भाग लेना प्रारंभ कर दिया था। ईसा ने जॉन नामक साधु से दो दीक्षाऐं प्राप्त की – 1. धर्म प्रचार और 2. सार्वजनिक सेवा

ईसा के हृदय में दीन, असहाय व्यक्तियों के प्रति विशेष दया, प्रेम विद्यमान था। मानव को मानव से प्रेम का पाठ, ईसा के जीवन का मुख्य लक्ष्य था। ईसा की बढ़ती ख्याति एवं चमत्कारों का परिणाम यह हुआ कि पुरोहित वर्ग ने ईर्ष्या के वशीभूत होकर उन पर ईश्वर निंदा का आरोप लगा कर सूली पर चढ़ा दिया। मरते समय ईसा के अन्तिम वाक्य थे – ''हे पिता, यह आत्मा तुम्हें अर्पित है।'' ईसा मसीह को ईश्वर पुत्र कहा गया। ईसाई धर्म का विकास यहूदी धर्म से हुआ है। ईसाइयों का धर्म–ग्रंथ बाइबिल है।

बाइबिल के दो खण्ड है– 1. प्राचीन विद्यान Old Testament 2. नूतन विद्यान New Testament

प्रथम खण्ड को यहूदियों ने स्वीकार किया। नूतन विधान ईसाई धर्म का मूल ग्रंथ हैं।

ईसाई धर्म में ईश्वर–ईसाई धर्म एकश्वरवादी धर्म है। इनके मत में ईश्वर व्यक्तित्व पूर्ण है लेकिन सशरीरी अर्थ में नही। ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान एवं दयालु है। उसने शून्य से जगत और मनुष्य की सृष्टि की है।

यहूदी धर्म की तुलना में ईसाई धर्म में, ईश्वर को करूणामय, परमपिता के रूप में स्वीकार किया गया है। ईसाई धर्म का ईश्वर जगत में व्याप्त होते हुए जगत से परे भी है। ईसाई धर्म का ईश्वर मानवता का ईश्वर है। ईश्वर 'प्रेममय' है। कहा भी गया है कि 'The God of Christianity is God of Loving' ईश्वर का प्रेम उन व्यक्तियों के लिये है, जो शुभ है तथा ईश्वर के प्रति आस्था रखते है।

ईसाई धर्म की अपनी मौलिक विशेषता है ईश्वर को 'क्षमाशील' मानना। ईश्वर, प्रायश्चित करने वाले व्यक्ति को क्षमा करता है, ईश्वर पापियों का उद्धारक है। ईसा स्वयं मरते समय (जब उन्हें सूली पर चढ़ाया गया) शान्त भाव से कहते है कि 'भगवान इनको क्षमा करना, वे बिचारे नहीं जानते कि क्या कर रहे है।'' ईसा की यह वाणी जगत इतिहास में अपूर्व है।

ईसाई धर्म में ईश्वर को 'पिता' की उपाधि दी है। नवीन विधान में 'पिता' शब्द का उल्लेख तीन सौ बार हुआ है। ईश्वर सब के 'पिता' है। इसी आधार पर मनुष्य संसार के अन्य व्यक्तियों के प्रति भी प्रेमपूर्ण व्यवहार करने के लिये तत्पर हो जाता है।

ईसा स्वयं ईश्वर रूप थे। उनके जीवनी से कई चमत्कारी घटनाऐं जैसे, कुछ ही पत्तों द्वारा हजारों को भोजन करवाना, मृतक शरीर को जीवन दान देना, चर्चित है। किन्तु अपने इस ईश्वरीय रूप के बावजूद वे स्वयं को ईश्वर का पुत्र कहते थे। बाइबिल की पंक्ति ''मैं ईश्वर का पुत्र हूँ, पिता हमसे महान है'' उनके ईश्वर के साथ संबंध को प्रमाणित करते है।

ईसाई धर्म में ''त्रयेक परमेश्वर'' (त्रिमूर्ति) का विचार स्वीकार किया गया है। इस मत में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक ही है।

जगत का स्वरूप– ईसाई धर्म के अनुसार ईश्वर ने

शून्य से एक काल विशेष में, पूर्ण प्रेम तथा पूर्ण इच्छा से सृष्टि की है। यह जगत ईश्वर पर आधारित है।

यह ईश्वर के समान पूर्ण एवं शुभ नहीं है। ईश्वर की संरक्षता में जगत का विकास होता है। मुनष्य प्रकृति के द्वारा ईश्वर तक पहुँच सकता हैं। ईश्वर प्रकृति के माध्यम से स्वयं को प्रकट करता है।

पाप की धारणा– ईसाई धर्म के अनुसार जब मनुष्य ईश्वर की इच्छा की अवज्ञा करता है, तो पाप की उत्पत्ति होती है। इस मत में प्रथम पुरूष आदम तथा प्रथम स्त्री 'होवा' ने ईश्वर के मना करने पर भी निषिद्ध फल को खाया। परिणाम स्वरूप वे पाप के भागी बन गए। आदम की सन्तान होने के कारण ही मनुष्य आज भी पापी है। अतः पाप सार्वभौमिक है। इस्लाम धर्म पाप के उत्तराधिकार रूप को नहीं मानते। ये पाप को साधारण अपराध मानते है।

मानव का स्वरूप– ईश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की है और अपने अनुरूप बनाया। इसीलिये इस धर्म के अनुसार मनुष्य को ईश्वर की प्रतिमा कहा गया है, किन्तु वह ईश्वर के समान नही माना गया। उसमें कोई चमत्कार नही। उसे स्वतंत्र माना गया है और जब तक वह ईश्वर को प्रेम करता है तब तक वह स्वतंत्र आत्मा के समान ईश्वर की प्रतिमा बना रहता है। शुभ अशुभ कर्मों के लिये मनुष्य स्वयं उत्तरदायी हैं धैर्य, न्याय, प्रेम, आदि गुण उसमें पूर्ण रूप से रहते है। ईसाई धर्म शरीर का तिरिस्कार नही करता वरन् उसे वास्तविक मानते है। आदर्श की प्राप्ति में शरीर बाधक नही है।

अशुभ की समस्या– जगत में अच्छाई के साथ बुराई भी दृष्टि गोचर होती है। ईसाई धर्मानुसार अशुभ की वास्तविक सत्ता है। धर्मानुसार शुभ कर्मो से अशुभ को दूर किया जा सकता है। अशुभ के कई प्रकार है–

1. प्राकृति अशुभ जैसे– भूकम्प, बाढ़ आदि
2. बौद्धिक अशुभ जैसे– अज्ञान, भ्रम आदि
3. तात्त्विक अशुभ जैसे– वस्तु के रचनात्मक दोष
4. सामाजिक अशुभ जैसे–अस्पृश्यता (छूआ–छूत), शोषण
5. नैतिक अशुभ जैसे–पाप, हिंसा, चोरी आदि

उपरोक्त प्रकारों में प्राकृतिक एवं नैतिक अशुभ प्रमुख है। ईसाई धर्म में अशुभ को मानव इच्छा स्वातंत्र्य (Freedom of rwill) का दुरोपयोग कहा है। मनुष्य अशुभ को, वंश परम्परा सिद्धान्त तथा अन्य कर्मों से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक भेजता रहता है। अतः स्पष्ट है कि अशुभ की सत्ता के लिये मनुष्य स्वयं उत्तरदायी हैं अशुभ से छुटकारा मनुष्य स्वयं के प्रयासों से प्राप्त नहीं कर सकता। ईश्वरीय प्रेम, आत्मसमर्पण, समाज के सदस्यों के प्रति निःस्वार्थ सेवा द्वारा ही वह ईश्वरीय करूणा का पात्र बनता है। तभी वह अशुभ से मुक्त हो सकता है।

ईसाई– धर्म की नीति–मीमांसा

नैतिकता ईसाई धर्म का केन्द्र बिन्दु है। दया, न्याय सहानुभूति, मित्रता परोपकार, क्षमा, दान, नम्रता, आत्मबलिदान आदि ईसाई नीतिशास्त्र के प्रमुख सद्‌गुण है। इस धर्म के नैतिक विचार ईसा मसीह के उपदेशों पर ही आधारित है। इन सद्‌गुणो की अनुपालना के लिये हृदय की विशालता और आन्तरिक शुद्धि अनिवार्य है पवित्र हृदय वाला व्यक्ति ही मुक्ति प्राप्त करने के योग्य है।

नैतिकता के पालन, ईश्वर प्रेम एवं विश्वास के द्वारा मुक्ति संभव है। ईश्वर कृपा एवं ईसामसीह में विश्वास द्वारा मनुष्य अपना जीवन सुखमय कर सकता है। मुक्ति में मनुष्य ईश्वर से एकाकार नही करता, उसकी स्वतंत्र सत्ता बनी रहती है।

पर्वत पर दिया गया उपदेश

ईसाई धर्म में ईसा मसीह द्वारा पर्वत पर दिये गए उपदेशों का विशेष महत्व है। अनुयायी इसका अत्यन्त श्रद्धा से अनुसरण करते है। उपदेश निम्न प्रकार से प्रारंभ होता है।

1. जिनके अन्दर दीनभाव उत्पन्न हो गया है, वे धन्य है क्योंकि ईश्वर का साम्राज्य उन्हीं को प्राप्त होगा।
2. विनयशील पुरूष धन्य है क्योंकि वे ही ईश्वर की दया प्राप्त कर सकेंगे।
3. दयालू व्यक्ति धन्य है क्योंकि उन्हें ही ईश्वरीय दया प्राप्त हो सकेगी।
4. जिनका अन्तः करण शुद्ध है, वे धन्य है क्योंकि ईश्वर का साक्षात्कार उन्हें ही होगा।

पर्वत पर दिये गए उपरोक्त उपदेशों का लक्ष्य धर्म को आण्डम्बरों से मुक्त करवाना तथा मानव हृदय को परिवर्तित करना था। मानवीय व्यभिचार के दण्ड स्वरूप कठोर नीति के स्थान पर ईसा मसीह कहते है– ''जो कोई बुरे मन से किसी स्त्री को देख भी लेता है, वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका। यदि तुम्हारी दाई ऑख तुम्हे ठोकर दे तो उसे निकाल कर फेंक दो, क्योंकि तुम्हारे लिये भला है कि एक अंग का नाश हो, और सारा शरीर नरक से बचे।''

जो मनुष्य अपने शत्रु से भी प्रेमभाव रखता है, वह अपने को ईश्वर का पुत्र कहलाने का अधिकार रख सकता है। ''दान गुप्त होना चाहिये, लोगों को दिखलाने के लिये दान न करो'' ईसा द्वारा कहे गए उपरोक्त विचारों के पीछे एक बड़ा उद्‌देश्य नीहित है। वे पृथ्वी पर ईश्वर का राज्य उतारना चाहते थे अर्थात विनीत और नम्र व्यक्तियों का राज। जिसमें सभी भातृत्व भाव से रहे और सभी को एक ही पिता की सन्तान समझा जाय।

बपतिस्मा (Baptism) – प्रायः सभी धर्मों में मुक्ति के लिये बाह्य शुद्धि (शारीरिक) और आन्तरिक शुद्धि को आवश्यक मानते है। ईसाई धर्म के अनुसार जड़ अशुभ है इसलिये शरीर को शुद्धि आवश्यक है। प्रारंभिक ईसाई धर्म में बपतिस्मा को पाप के निवारण के लिये आवश्यक माना। वास्तव में 'बपतिस्मा' एक संस्कार है। जिसके द्वारा वह अपने शरीर को शुद्ध बनाये रख सकता है और तब ही वह ईसा के प्रेम का पात्र बन सकता है।

पाप भौतिक अपवित्रता का दूसरा नाम है। जल एवं अग्नि शुद्धि का साधन है। ईसाई धर्म में शुद्धता और पवित्रता के लिये जल को साधन माना गया है। अग्नि को भी शुद्धि का माध्यम माना गया है।

ईसाई धर्म के सम्प्रदाय

मध्यकाल में गिरजाघर को, ईसा और उनके आदर्शो का प्राप्त करने का एक मात्र माध्यम माना जाता था, परन्तु कालान्तर में गिरजाघर व्यक्ति विशेष (पोप) और प्रभुता का केन्द्रस्थल बन गया। पॉप स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि मानकर मनमाने अत्याचार, अन्याय करने लगे। प्रतिक्रियावश मार्टिन लूथर ने पोप के विरूद्ध आवाज उठाई। इसी के पश्चात् ईसाई धर्म में दो भेद या सम्प्रदाय उभर कर सामने आए –

1. कैथोलिक 2. प्रोटेस्टैंट

1. कैथोलिक–ईसाई, पॉप ओर चर्च की प्रभुता, गिरजाघर का महत्त्व, पॉप को धर्माध्यक्ष एवं सन्देह से मुक्त सत्ता के रूप में स्वीकार करते हैं। बाइबल का अर्थ लगाने का एक मात्र अधिकार पोप का है।

2. प्रोटेस्टैंट– ईसाई गिरजाघर की प्रभुता का खण्डन करते है। प्रमुखता, ईश्वर एवं ईसा पर विश्वास रखना है। पॉप को पिता कहना अनुचित है, क्योंकि 'पिता' एक ही है, जो स्वर्ग में रहता हैं। पॉप क्षमा प्रदान करने का अधिकारी भी नही है।

ईसाई धर्म और यहूदी धर्म

ईसाई धर्म का उद्भव यहूदी धर्म से माना जाता है। यहूदी धर्म की कुछ ऐसी मान्यताऐं रही है, जो ईसाई धर्म का आधार सिद्ध हुई। यहूदी धर्म का ऐकेश्वरवाद, नैतिक विचार, और मुक्ति संबंधी धारणा से ईसाई धर्म प्रभावित हुआ।

यहूदी धर्म के संस्थापक 'मूसा' है और ईसाई धर्म के स्थापक 'जिसस' है। इन दोनों के द्वारा स्थापित धर्म में कुछ भिन्नताऐं पाई जाती है, जो निम्न लिखित है –

1. यहूदी धर्म में ईश्वर करूणामय होते हुए भी मुख्य रूप से न्यायी है। इनका धर्म मुख्यातया कर्मवादी है। जबकि ईसाई धर्म ईश्वर को, मुख्यतः प्रेममय और करूणामय माना है।

   दूसरी ओर ईसाई धर्म ईश्वरीय कृपा की धारणा पर अधिक बल देते हुए मानते है कि व्यक्तिगत कर्म द्वारा मुक्ति संभव नहीं, बल्कि ईसामसीह और उनकी क्रुशीय मृत्यु को उद्धार के मार्ग के रूप में विश्वास करने से ही पाप से मुक्त हो सकता है। अतः कर्म नही बल्कि भक्ति और ईश्वरीय कृपा पर पूर्ण विश्वास से ही मुक्ति संभव है।

2. दोनों ही धर्म 'बाइबिल' को धार्मिक ग्रंथ मानते है किन्तु जहॉ यहूदी धर्म बाइबिल के प्राचीन विधान को मान्यता देते है, वही ईसाई धर्म बाइबिल के नवीन विधान को मान्यता देते है।

3. यहूदी धर्म में एकेश्वरबाद को स्वीकार किया गया है जबकि ईसाई धर्म में त्र्येकेश्वरवाद को स्वीकार किया गया। यहूदी, ईसाई धर्म के त्र्येक परमेश्वरवाद, अवतारवाद स्वीकार नही करते।

4. यहूदी धर्म के अनुसार मनुष्य और ईश्वर के बीच साक्षात संबंध संभव है। इसलिये ये ईसाई धर्म के समान न तो ईसा को ईश्वर का पुत्र और न ही ईसा को मुनष्य और ईश्वर को मध्यस्थ रूप में स्वीकार करते है। इनकी मान्यता है कि यदि ईश्वर का अवतरण और वह भी मनुष्य देह (ईसा) रूप में स्वीकार किया जाता है (जैसा कि ईसाई धर्म कहता है) तो यह ईश्वर की निंदा करना होगा।

5. यहूदी धर्म पारिवारिक जीवन पर अधिक बल देते है जबकि ईसाई धर्म सन्यासवाद का समर्थन करता है।

6. ईसाई धर्म के अनुसार 'ईसा' ईश्वर के पुत्र है इसलिये 'ईसा' सवौच्च है, किन्तु यहूदी धर्म का कहना है कि वे ईसा को ईश्वर का पुत्र नही मानते। यही नहीं, क्योंकि ईसा ने स्वयं को पैगंबर और 'मूसा' इब्राहिम से स्वयं को अधिक महत्वपूर्ण बताया इसलिये वह (यहूदी धर्म) ईसा को स्वीकार नही करते। आज भी यहूदी धर्म अपने 'मसीहा' की प्रतीक्षा कर रहे है।

7. प्राचीन विधान (ऑल्ड टेस्टामेन्ट) में उपलब्ध शिक्षाओं को ईसा ने अपने 'शैलोपदेश' में अधिक तार्किक एवं संगत रूप में प्रस्तुत किया।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि चमत्कार पूर्ण आध्यात्मिक व्यक्तित्व के धनी, ईसा मसीह द्वारा स्थापित ईसाई धर्म को संसार में अनूठा स्थान प्राप्त है। उन्होंने दूसरो को मृत्यु से बचाया किन्तु स्वयं के सूली पर चढ़ाने के लिये तैयार रहे। मनुष्य के पापों के निवारण हेतु अपने प्राणों की आहूति दे दी। ऐसा उदाहरण विश्व इतिहास में मिलना कठिन हैं। ईसाई धर्म यहूदी धर्म की त्रुटियों को दूर कर विश्व के इतिहास में, संगत धर्म के रूप में प्रतिष्ठित है।

(iii) इस्लाम धर्म–पंथ

इस्लाम धर्म के जन्मदाता हजरत मौहम्मद का जन्म अरब देश के मक्का नगर में 570 ईस्वी में हुआ। इनके पिता एक

साधारण व्यापारी थे। बचपन से ही मौहम्मद एक विचारशील व्यक्ति थे। अल्प आयु में इन्हें दौरा पड़ जाया करता था। इस अचेतन अवस्था में वह ध्यानावस्थित मुद्रा में अल्लाह का ध्यान करते थे। अचेतन अवस्था से लौटने पर वह उपदेश दिया करते थे, जिसको ईश्वरीय प्रेरणा कहा गया है। इनके उपदेशों की विशेषता यह थी कि यह समाधि अवस्था में ही उनका उच्चारण करते थे, जिन्हें बाद में इनके शिष्यों ने एकत्रित कर लिया और 'कुरान' नाम दिया। इसी को इस्लाम धर्म का नाम दिया गया। इस्लाम का अर्थ है – 'शांति का मार्ग'

इस्लाम धर्म एक 'पैगंबरी' (Prophetic) या नबी मूलक धर्म है। हजरत मौहम्मद ने इस्लाम धर्म की स्थापना की। इस्लाम के अनुसार हजरत मुहम्मद ने ईश्वर संबंधी शिक्षा को अन्तिम रूप में विश्व के समक्ष रखा है। इस्लाम में मुहम्मद को 'रसूल' या 'अल्लाह' का संदेशवाहक माना जाता है। ''अल्लाह को छोड़कर कोई दूसरा ईश्वर नहीं और मुहम्मद उसके पैगंबर (रसूल) है।'' यह इस्लाम की मूल मान्यता है।

इस्लाम के सिद्धान्तों का प्रतिपादन मक्का से ही प्रांरभ किया किन्तु वहॉ अत्यधिक विरोध एवं मुहम्मद साहब का जीवन संकट में पड़ जाने के कारण मुहम्मद मदीना पहुॅचे। वही से इस्लाम धर्म का प्रचार एवं प्रसार सम्पूर्ण अरब देशों में हुआ।

धर्मग्रंथ– इस्लाम के अन्तर्गत 'कुरान' को श्रुत ग्रंथ ;त्मअमंसमकद्ध माना जाता है। दूसरे शब्दो में इसे 'अल्लाह की वाणी' समझा जाता है, जो मौहम्मद के माध्यम से विश्व को प्राप्त हुई है।

इस्लाम में अनेक लोगों का विश्वास है कि कुरान की असली प्रतिलिपि स्वर्ग में रखी हुई है 'कुरान' के अतिरिक्त इस्लाम में 'सुन्नाह' या 'हदीस' को भी मान्यता दी गई है। इसका संबंध मुहम्मद के जीवन, वचन और व्यवहार से है।

इस्लाम में ईश्वर (अल्लाह) विचार

इस्लाम धर्म एकेश्वरवादी धर्म है। 'कुरान' शरीफ के अनुसार इस संसार का जन्मदाता अल्लाह है और जगत के जितने भी जीव है व सब अल्लाह के बन्दे (दास) है। इसी कारण से कुरान में अल्लाह का अथाह महत्त्व बतलाने के साथ–साथ उसके कार्य में अटूट आस्था का होना आवश्यक बतलाया गया है। अल्लाह में आस्था के अतिरिक्त किसी और प्रकार से इस जगत के निर्माणकर्त्ता की उपासना करना वर्जित है। अल्लाह के प्रत्येक बन्दे को कयामत के अन्तिम समय तक अल्लाह के न्याय में विश्वास रखना होता है। कुरान शरीफ में प्रत्येक व्यक्ति को भले कर्म करने में विश्वास रखना चाहिए।

इस्लाम का अर्थ है, वह धर्म जिसमें व्यक्ति अपने को ईश्वर की इच्छा पर अर्पित कर दे। इस्लाम को स्वीकार करने वाले को 'मुसलमान' कहा जाता है। 'मुसलमान' वह है, जो ईश्वर के एकत्व (तौहिद) में पूरे मन से विश्वास (ईमान) रखता है, और इसे अपने वचन एवं आचरण द्वारा व्यक्त करता है।

मौहम्मद का मानव के लिये मुख्य रूप से यह संदेश है कि बहुईश्वरवाद का, मूर्तिपूजा का, नास्तिकों का और द्वैतवाद का विरोध करना चाहिए। वास्तव में मुसलमान वह है जो नमाज (प्रार्थना) पढ़ता है, रोजा रखता है, जीवन में एक बार मक्का अवश्य जाता है, दान देता है अपने वादे को पूरा करता है तथा दुविधा के समय शान्ति से कार्य करता है। कुरान शरीफ के 11 वें अध्याय के अनुसार ''अल्लाह पर सब कुछ आधारित है, वह न उत्पन्न करता है और न ही उत्पन्न किया जाता है और उसके समान कोई भी नही है।''

मानव विचार– इस्लाम के अनुसार मानव की सृष्टि ईश्वर ने सूक्ष्म मिट्टी से की है। ईश्वर ने मनुष्यों को देवदूतों (Angels) से अधिक ऊँचा स्थान दिया है। यह बात इस बात से प्रमाणित होता है कि ईश्वर ने देवदूतों को प्रथम मानव–आदम के सामने सिर झुकाने को कहा। आदम को देवदूतों से ऊपर इसलिये माना गया, क्योंकि उसमें स्मृति और सोचने समझने की क्षमता है। इसके अतिरिक्त मनुष्य में संकल्प–स्वातंत्र्य है और वह अच्छे और बुरे के बीच चुनाव कर सकता है।

मानव ईश्वर से अलग और स्वतंत्र अस्तित्व रखता है किन्तु इस्लाम में मानव की सत्ता को ईश्वर के सामने बहुत छोटा माना गया है। इस्लाम के अनुसार हर व्यक्ति की तकदीर पहले से ही ईश्वर द्वारा पूर्व निर्धारित है।

अन्तिम नियति– अन्य धर्मों के समान इस्लाम में भी 'पुनरूत्थान', 'स्वर्ग–नरक' और 'कयामत का दिन' की अवधारणा पायी जाती है। 'कुरान' में बार–बार कयामत के दिन का उल्लेख किया गया है। जब सभी को उनके कर्मो के अनुसार दण्ड और पुरस्कार दिया जायेगा। कयामत के दिन तुरही बजायी जायेगी और सभी मुर्दे फिर से जी उठेंगे। अल्लाह और पैगंम्बर में विश्वास रखने वाले को स्वर्ग और अविश्वास करने वाले के नरक भेज दिया जायेगा। इस पुनरूत्थान के बाद फिर मृत्यु नहीं होगी।

इस्लाम में उपासना

इस्लाम धर्म के अनुसार केवल कुरान–हदीस के ज्ञान से कोई मुसलमान नहीं बन जाता है। इसके लिये इस्लाम में बताऐं गए कर्मों को रखना जरूरी है। मुसलमान का पहला कर्म है – ''ला इलाह इल्लिल्लाह मुहम्मदन् रसूल्लाही'' अर्थात् अल्लाह के सिवाय और कोई पूजनीय नहीं है तथा मौहम्मद इसके रसूल है'' पर पूर्ण विश्वास करना।

उस अल्लाह की पूजा अराधना करने के लिये किसी माध्यम (मूर्ति आदि) अथवा पुजारी की आवश्यकता नही। कुरान के अनुसार निम्नलिखित पाँच प्रमुख कर्म प्रत्येक मुसलमान को

पालन करने चाहिये :–

1. **मत का उच्चारण करना**– इस्लाम धर्म की प्रतिज्ञा 'ला इलाह इल्लिल्लाह मुहम्मदन् रसूल्लाही' का दिन में कम से कम एक बार दिल से समझते हुए शुद्ध रूप से उच्चारण करना।
2. प्रतिदिन पाँच बार नमाज में कलमा पढ़ना।
3. रमजान के माह में रोजा (व्रत) रखना।
4. धन–सामर्थ्य रहने पर हज करना।
5. मुस्लिम समाज की सहायता के लिये ढाई प्रतिशत के हिसाब से जकात (कर का नाम) देना

हजरत मौहम्मद ने इस्लाम के अन्तर्गत छोटे–बड़े, गरीब–अमीर में समानता की शिक्षा दी। इस समाज में किसी प्रकार के भेद–भाव को कोई स्थान नहीं है। उन्होंने कुरान शरीफ में निम्न शिक्षाऐं दी हैं –

1. अल्लाह एक और अनादि हैं
2. मनुष्य का जगत में केवल एक बार जन्म होता है।
3. मृत्यु के बाद जब शव कब्र में रखा जाता है तो दूसरा जीवन प्रारंभ होता है।
4. कयामत (महाप्रलय) के बाद नया जीवन प्रारंम्भ होता है कब्र में केवल जो हड्डी शेष रह जाती है, कयामत के दिन उसी से नया जीवन प्रारंभ होता है।
5. कुरान में जीवन का मुख्य उद्देश्य अल्लाह के साथ मिलना बताया है।
6. इस्लाम कोई व्यक्तिगत धर्म नहीं, इसका क्षेत्र सम्पूर्ण समाज हैं। इसमें राजनीति, न्याय, शासन प्रबंध, विवाह, तलाक, युद्ध और सन्धि आदि सभी के बारे में व्यापक रूप से समावेश किया गया है।
7. जिहाद शब्द का अर्थ 'संघर्ष'। संघर्ष के तीन क्षेत्र है– 1. दिखाई देने वाले शत्रु के विरूद्ध 2. अप्रत्यक्ष शत्रु के विरूद्ध संघर्ष जिसको कुरान में 'जिन' कहा गया है। 3. निम्न इन्द्रियों से संघर्ष। किन्तु बाद में जिहाद स्वरूप बदल दिया गया। पृथ्वी को दो भागों में बाट दिया –

   (अ) दारूल इस्लाम– शान्ति का देश जहॉ मुस्लिम जनता स्वतंत्र एवं प्रसन्न रूप से शासन करती है।

   (ब) दारूल हरब– अर्थात् युद्ध स्थल, जिस का तात्पर्य था कि ऐसे देश जिन से युद्ध करने से सबब हासिल होता है। इस प्रकार इस्लाम के अतिरिक्त धर्मावलम्बियों से युद्ध करना एक धार्मिक कृत्य बन गया। इसे 'जिहाद' नाम दिया गया।

नीति अथवा आचार संबंधी विचार– इस्लाम के नैतिक विचारों का उल्लेख 'कुरान' में मिलता है। सम्पूर्ण नैतिकता का मापदण्ड 'कुरान' ही है। वे कर्म जो कुरान द्वारा आदेशित है, उचित हैं और जिन कर्मों का निषेध किया गया हैं, अनुचित हैं।

इस्लाम में मनुष्य के सद्गुण और दुर्गुण दोनों की विवेचना की गई है।

सद्गुण– शुद्धता, ईमानदारी, मित्रता, क्षमा, सहानुभूति, न्याय, प्रेम, करूणा, दान, नम्रता, मर्यादा, कृतज्ञता, धैर्य आदि।

दुर्गुण– क्रोध, दुर्वचन, हत्या, लोभ, चुगली, मद्यपान, जुआ खेलना, रिश्वत, मिथ्यावचन, आत्महत्या, ईर्ष्या आदि दुर्गुण बताया है।

इस्लाम के सम्प्रदाय– मुहम्मद साहब के मृत्यु के पश्चात् इस्लाम धर्म मुख्य रूप से दो सम्प्रदायों में विभक्त हो गया– 1. शिया 2. सुन्नी

मुहम्मद साहब के दामाद 'हजरत अली' के शहीद पुत्र इमाम हुसैन के अनुयायी 'शिया' कहलाते है।

मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी (खलीफा) अबूबकर के अनुयायी सुन्नी कहलाते है।

सूफीमत

मुसलमानों में प्रबल आध्यात्मिक भाव के कारण सूफीमत का जन्म हुआ। सूफी मत में अध्यात्म, धर्म का प्राण है। इसी कारण संभवतः इस मत में धर्म के बाह्य रूप कर्मकाण्ड की उपेक्षा की गई है।

कुरान में अल्लाह और उसके बन्दों का संबंध मालिक और गुलाम जैसा बताया गया है लेकिन सूफी मत प्रेम के संबंध को मानते है।

'सूफी' शब्द के अनेक अर्थ किये गये है। कुछ लोगों की मान्यता हे कि 'सूफी' वह व्यक्ति है जो सूफ (अर्थात ऊनी कपड़े) पहनता है। तकनीकी रूप से सूफी उस मुसलमान संन्यासी को कहा जाता है, जो ईश्वर के साथ सायुज्य (एकत्व) कर इस्लामी पूर्णता को प्राप्त करता है।

जो व्यक्ति पवित्र और धार्मिक थे, उन्हें भी सूफी नाम से संबंधित किया जाता था।

कुछ दूसरे विद्वानों के अनुसार वे पवित्र किन्तु निराश्रित व्यक्ति जिन्होंने अपना समय पूजा और ममन में 'सुफ्फ' पर बैठकर व्यतीत किया वे आगे चलकर 'सूफी' कहलाये। यह सुफ्फ (Terrace) मदीना की मस्जिद में मौहम्मद साहब द्वारा निर्मित किया गया था।

सूफीमत का विकास मौहम्मद साहब के रहस्यात्मक सिद्धान्तों की पराकाष्ठा माना जा सकता है।

सूफीमत सर्वेश्वरवादी मत (सभी वस्तुए ईश्वरमय है) को स्वीकार करते है। इस मत के अनुसार मानव शुद्ध हृदय और प्रेम

के द्वारा ईश्वर से एकाकार हो सकता है।

इनका साधना मंत्र– 'अनल हक' (मै ही ईश्वर हूँ) ईश्वर प्राप्ति हेतु कठोर तपस्या उपवास और भावपूर्ण प्रार्थना से संभव है। जगत अपूर्ण और अशुभ है अतः सूफीमत में भौतिक जगत की उपेक्षा की गई हैं। जगत के प्रति उदासीन होकर जीव विरह रूपी साधना द्वारा परमात्मा का चिन्तन करता हैं और अन्त में उसके अहम् के नाश के साथ वह ईश्वरमय हो जाता है। इस अवस्था के 'फना' कहते हैं। सूफी साधना में जप का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस जप के लिये संगीत आवश्यक है। इस्लाम संगीत का विरोध करता है किन्तु सूफी संगीत द्वारा धार्मिक वातावरण का निर्माण करते है जिससे ईश्वर की साधना हो सके।

इस्लाम धर्म की विशेषताएं–

इस्लाम धर्म में कुछ ऐसी विशेषताऐं है, जिसके कारण वह अन्य धर्मों से अपना विशिष्ट स्वरूप रखता हैं। वे विशेषताएँ निम्न है :–

1. इस्लाम धर्म ऐकेश्वरवाद (ईश्वर एक है) में विश्वास करते है। यही कारण है कि वे मूर्तिपूजा तथा अनेकश्वरवाद का विरोध करते है।
2. माता–पिता की सम्पति पर पुरूषों के समान ही स्त्रियों की भी भागीदारी है।
3. बहु–विवाह की धारणा में विश्वास करना। इसके अन्तर्गत विधवाओं और उनके संबंधियों को कष्टमय जीवन से छुटकारा दिलवाने की भावना नीहित हैं किन्तु 'कुरान' में स्पष्ट लिखा है कि ''यथेष्छ विवाह करो – एक, दो, तीन, चार परन्तु यदि भय हो कि प्रत्येक विवाहिता के साथ उचित व्यवहार नही कर सकेंगे तो एक ही विवाह पर सन्तोष करो'' (4:2:1)
4. अपराध के लिये कठोर दण्ड व्यवस्था को स्वीकार करना। प्राण के बदले प्राण लेना व चोरी के लिये हाथ काट डालना, व्यमिचार के लिये सौ कोड़े मारना आदि। इस प्रकार के दण्ड व्यवस्था का आधार अन्य व्यक्तियों में भय पैदा करना था, ताकि वे अपराध न करें।
5. भ्रातृत्व भाव को विकसित करने हेतु सामूहिक नमाज पर अधिक बल दिया गया है।
6. मानव सेवा की भावना के बढ़ावा देने के लिये दान अथवा खैरात की व्यवस्था नैतिक आधार पर करना। मानव सेवा द्वारा मनुष्य 'अल्लाह' तक पहुँचने का पात्र बन सकता है।

इस्लाम धर्म एवं ईसाई धर्म में समानताएं–

1. दोंनो पैगंबरी धर्म हैं। ईसाई धर्म का आधार ईसामसीह का उपदेश है। इस्लाम धर्म का आधार मुहम्मद साहब आदर्श है।
2. दोनों एकेश्वरवादी धर्म है, जगत और मनुष्य दोनों ईश्वर की सृष्टि है।
3. दोनों ने अपने धार्मिक ग्रंथों को 'श्रुत' माना।
4. दोनों मुक्ति, स्वर्ग–नरक और कयामत के दिन में विश्वास करते है।

इस्लाम धर्म एवं ईसाई धर्म में असमानताएं–

1. ईसाई धर्म में 'जिसस' को सर्वोच्च महत्त्व दिया जाता है और मुहम्मद साहब को पैगंबर के रूप में मान्यता नहीं दी जाती है जबकि इस्लाम में मुहम्मद साहब को सर्वोच्च पद देते हुए 'जिसस' को पैगंबर तो मानते है, लेकिन उन्हें 'ईश्वर–पुत्र' या 'अवतार' नहीं माना। इस्लाम, ईसाई धर्म की मूल मान्यता कि जिसस को सूली पर चढ़ाया गया था, को भी अस्वीकार करते है।
2. इस्लाम धर्म एकेश्वरवाद को स्वीकार करता है और इसलिये ईसाईधर्म द्वारा स्वीकृत 'त्रयेक परमेश्वर' की धारणा का विरोध करते हुए एकेश्वरवाद को स्वीकार किया।
3. ईसाई धर्म के अनुसार 'बाइबिल' 'श्रुत ग्रंथ' है जबकि इस्लाम धर्म के अनुसार 'कुरान' को 'श्रुत ग्रंथ' के रूप में सर्वाधिक महत्व दिया।
4. ईसाई धर्म के अनुसार मानव ईश्वर से एकाकार नहीं हो सकता परन्तु इस्लाम धर्म में 'अल्लाह' और मनुष्य के मध्य इतनी दूरी नहीं है, क्योंकि मनुष्य ईश्वरत्व को प्राप्त कर सकता है।
5. दोनों धर्म ईश्वर को जगत का सृष्टा मानते है लेकिन इस्लाम धर्म में जगत में अशुभ की सत्ता नहीं हैं, किन्तु ईसाई धर्म अशुभ को वास्तविक मानते है।
6. इस्लाम धर्म के अनुसार मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। उसे ईश्वर की कृपा पर निर्भर नही रहना पड़ता, किन्तु ईसाई धर्म में ईश्वर की कृपा के बिना मनुष्य मुक्ति प्राप्त करने के योग्य नहीं बन सकता।
7. ईश्वर के गुणों के संबंध में भी जहाँ इस्लाम, ईश्वर के शक्ति पक्ष पर अत्यधिक बल देते है, वहीं ईसाई धर्म, ईश्वर में विवेकशीलता और क्षमाशीलता पर अत्यधिक बल दिया है।
8. उपासना संबंधी क्रियाओं को लेकर इस्लाम धर्म, धार्मिक क्रियाओं जैसे– उपवास रखना, दिन में पॉच बार नमाज पढ़ना, खैरात देना, हज के लिये मक्का जाना आदि पर बहुत बल देते है। दूसरी और ईसाई धर्म में अन्तःकरण की शुद्धता, हृदय की विशालता पर अधिक बल दिया है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न–

1. किस धर्म के अनुसार 'जिसस' को 'ईश्वर–पुत्र' मानना (ईश्वर निंदा) के समान है–
   (अ) सिख धर्म (ब) हिन्दू धर्म
   (स) यहूदी धर्म (द) ईसाई धर्म
2. बाइबिल को प्राचीन विधान संबंधित है–
   (अ) यहूदी धर्म (ब) ईसाई धर्म
   (स) इस्लाम धर्म (द) बौद्ध धर्म
3. 'त्रयेक परमेश्वर' की धारणा को मानने वाला धर्म है–
   (अ) इस्लाम धर्म (ब) सिख धर्म
   (स) ईसाई धर्म (द) यहूदी धर्म
4. इस्लाम धर्म का ग्रंथ है–
   (अ) बाइबल (ब) गीता
   (स) कुरान (द) गुरू ग्रंथ
5. ईसा मसीह स्थापक है–
   (अ) सिख धर्म के (ब) बौद्ध धर्म के
   (स) यहूदी धर्म के (द) ईसाई धर्म के
6. इस्लाम धर्म के संस्थापक है–
   (अ) ईसा मसीह (ब) मौहम्मद
   (स) गुरू नानक (द) महावीर
7. जकात की धारण संबंधित है–
   (अ) ईसाई धर्म से (ब) इस्लाम धर्म से
   (स) यहूदी धर्म से (द) हिन्दू धर्म से
8. मानवता को पापों से मुक्ति दिलाने के लिये क्रूसीय मौत को स्वीकार करने वाले है –
   (अ) मौहम्मद साहब (ब) ईसा मसीह
   (स) गुरू नानक (द) महावीर
9. सूफी पंथ किस धर्म से संबंधित है–
   (अ) यहूदी धर्म से (ब) ईसाई धर्म से
   (स) इस्लाम धर्म से (द) हिन्दू धर्म से
10. पाप को उत्तराधिकार के रूप में मानते है –
    (अ) ईसाई धर्म (ब) इस्लाम धर्म
    (स) सूफी धर्म (द) यहूदी धर्म

अति लघुउत्तरात्मक प्रश्न

1. प्राचीन विधान में किस का वर्णन किया गया है?
2. यहूदी धर्म के अनुसार ईश्वर के अशोभनीय गुण क्या है?
3. यहूदी धर्म में जेहोवाहा (Jehovah) कौन है?
4. ईसाई धर्म के अनुसार ईश्वर और मनुष्य के बीच कौनसा संबंध है?
5. इस्लाम में मुहम्मद को क्या माना जाता है?
6. 'इस्लाम' का क्या अर्थ है?
7. 'जिहाद' शब्द का क्या अभिप्राय है?
8. इस्लाम धर्म में 'दारूल इस्लाम' किसे कहा है?
9. इस्लाम धर्म में 'जकात' क्या है?
10. ईसाई धर्म में 'बपतिस्मा' क्या है?
11. कैथोलिक ईसाई किसे कहा जाता है?
12. मार्टिन लूथर ने किसका विरोध किया?

लघुउत्तरात्मक प्रश्न

1. अशुभ के संबंध में यहूदी धर्म के विचार को स्पष्ट कीजिये।
2. कर्म सिद्धान्त और पुनर्जन्म के विषय में यहूदी धर्म के क्या विचार है?
3. यहूदी धर्म के न्याय–दिवस को समझाइयें।
4. ईसाई धर्म के अनुसार जगत के स्वरूप को स्पष्ट कीजिये।
5. ईसाई धर्म पाप की धारणा को समझाइये।
6. ईसाई धर्म में अशुभ के प्रकारों की व्याख्या कीजिये
7. यहूदी धर्म ओर ईसाई धर्म में क्या भिन्नता है?
8. इस्लाम धर्म में मौहम्मद साहब को किस रूप में स्वीकार किया गया है?
9. इस्लाम धर्म के मानव संबंधी धारणा को समझाइये।
10. इस्लाम धर्म और ईसाई धर्म में क्या भेद है?

निबंधात्मक प्रश्न

1. यहूदी धर्म के नीति संबंधी विचारों की व्याख्या कीजिये।
2. ईसाई धर्म में ईश्वर की धारणा क्या है? व्याख्या कीजिये।
3. ईस्लाम का अर्थ बताते हुए उनके उपासना संबंधी विचारों की व्याख्या कीजिये।
4. सूफीमत क्या है? इनके विचारों को स्पष्ट कीजिये।

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. द 2. अ 3. स 4. स 5. द
6. ब 7. ब 8. ब 9. स 10. अ

सन्दर्भ–पुस्तकें

1. पाश्चात्य दर्शन – चन्द्रधर शर्मा
2. पाश्चात्य दर्शन का इतिहास – प्रो. दयाकृष्ण
3. नीति शास्त्र के मूल सिद्वान्त–डा. वेद प्रकाश वर्मा
4. नीति शास्त्र – डा. जे. एन. सिन्हा
5. भारतीय नीति शास्त्र – डा. दिवाकर पाठक
6. धर्म दर्शन की रूपरेखा – डा. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा
7. धर्म दर्शन का आलोचनात्मक अध्ययन– डा. शिवभानु सिंह
8. ग्रीक एवं मध्ययुगीन दर्शन का वैज्ञानिक इतिहास – जगदीश सहाय श्रीवास्तव